# भारत का राष्ट्रीय जलचर - गंगा डॉल्फिन

**नवनीत कुमार गुप्ता**

जीवन के विविध रूप पृथ्वी की सुंदरता में चार चांद लगाते हैं। जीवों के कुछ रूप सदियों से मानव के साथी रहे हैं। ऐसा ही एक हमसफर है डॉल्फिन। जल में रहने वाली डॉल्फिन मनमौजी जीव है, जो कभी बरसात की रिमझिम फुहारों से प्रसन्न हो उठती है तो कभी ज़ोर से बिजली चमकने और बादल गरजने पर खड़ी होकर बार-बार पानी में उछलती हुई सुहाने मौसम का मज़ा लेती है।

ऐसा माना जाता है कि धरती पर डॉल्फिन का उद्‌भव करीब दो करोड़ वर्ष पहले हुआ था और अन्य स्तनधारियों की तरह डॉल्फिन ने भी लाखों वर्ष पूर्व जल से ज़मीन पर बसने की कोशिश की थी। लेकिन धरती का वातावरण डॉल्फिन को रास नहीं आया और उसने वापिस पानी में ही बसने का मन बनाया। हालांकि यह लाखों वर्षों से मानव की हमसफर रही है लेकिन आज इसका अस्तित्व खतरे में है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने वर्ष 2009 में गंगा व अन्य भारतीय नदियों में पाई जाने वाली डॉल्फिन को राष्ट्रीय जलीय जीव घोषित किया है। भारत में इसे सोंस नाम से भी जाना जाता है।

मानव की भांति डॉल्फिन भी एक सामाजिक प्राणी है। इस जीव का गर्भधारण काल दस महीनों का होता है। डॉल्फिन एक बार में एक ही बच्चे को जन्म देती है। प्रसव के कुछ दिन पहले से गर्भवती डॉल्फिन की देखभाल के लिए पांच-छह मादा डॉल्फिन उसके आसपास रहती हैं। दो घंटे चलने वाले प्रसव के पूरे समय डॉल्फिनों का एक समूह मां और नवजात डॉल्फिन की मदद को तैयार रहता है। बच्चे के जन्म के समय डॉल्फिनों का समूह मानव की भांति प्रसन्न होकर उत्सव मनाता है।

चूंकि डॉल्फिन में मछलियों जैसी श्वसन प्रणाली नहीं होती है इसलिए उन्हें सांस लेने के लिए पानी की सतह पर आना पड़ता है। इसी कारण प्रसव के बाद नवजात शिशु को शुद्ध हवा की आपूर्ति के लिए अन्य डॉल्फिन उसे पानी की सतह पर लाती हैं। मानव की भांति मादा डॉल्फिन भी बच्चों का लालन-पालन बड़े प्यार से करती है। डॉल्फिन के बच्चे एक साल तक स्तनपान करते हैं। इस दौरान डॉल्फिन बच्चे को शिकार करने और तैराकी में निपुण बनाती है। अधिकतर कम उम्र की डॉल्फिन तट के समीप आकर झुंड में खेलती हैं। डॉल्फिन का बच्चा अपनी मां की सीटी की आवाज़ को पहचान कर घूमकर उसके पास आ जाता है। लगभग तीस वर्ष के अपने जीवनकाल में अधिकतर डॉल्फिन अपने पूरे परिवार या केवल माता-पिता के साथ रहती हैं। डॉल्फिन भाषा संकेतों से आपस में संवाद भी करती हैं।

डॉल्फिन 5 फुट से 18 फुट तक लंबी हो सकती है। मादा डॉल्फिन का आकार नर की तुलना में अधिक होता है। डॉल्फिन का निचला हिस्सा सफेद और पार्श्व भाग काला होता है। मुंह पक्षियों की चोंच जैसा होता है।

शरीर पर बाल नहीं होने के कारण डॉल्फिन अपने शरीर का तापमान स्थिर रखने में असमर्थ होती हैं। इसके चलते ये प्रवास यात्राएं करती हैं। डॉल्फिन के सामान्य तैरने की गति 35 से 65 कि.मी. प्रति घंटे होती है लेकिन गुस्से में यह करीब 90 कि.मी. प्रति घंटे की गति से तैरती हुई बिना रुके करीब 113 किलोमीटर तक यात्रा कर सकती है। डॉल्फिन को समुद्र में जहाज़ों के साथ मीलों तक तैराकी का विशेष शौक होता है। डॉल्फिन पानी में करीब 300 मीटर गहरा गोता लगा सकती है। जब यह गोता लगाती है तो इसकी हृदय गति आधी रह जाती है, और ऑक्सीजन की ज़रूरत कम होती है। यह 5-6 मिनट तक पानी के अंदर रह सकती है।

डॉल्फिन की एक विशेषता तरह-तरह की आवाज़ें निकालना है। अपने अनोखे कंठ के चलते डॉल्फिन विभिन्न प्रकार की करीब 600 आवाज़ें निकाल सकती है। डॉल्फिन सीटी बजाने वाली एकमात्र स्तनपायी जलचर है। यह म्याऊं-म्याऊं भी कर सकती है और कुकडू-कू भी। तरह-तरह की

डॉल्फिन की चरणबद्ध सीखने की प्रवृत्ति इसको सभी जलचरों में सबसे बुद्धिमान जीव बनाती है। इसका मनुष्यों, विशेष रूप से बच्चों से विशेष लगाव होता है। डॉल्फिन को इन्सानों के साथ खेलना अच्छा लगता है। काफी समय से डॉल्फिन मनोरंजन का साधन रही है। यह प्रशिक्षण से विभिन्न प्रकार के खेल भी दिखाती है। डॉल्फिन कभी गेंद को अपनी नाक पर उछालती है तो कभी पानी में लंबी छलांग लगाने के अतिरिक्त यह रिंग में से भी निकल सकती है। प्रशिक्षण से डॉल्फिन तरह-तरह के करतब करती है।

डॉल्फिन सभी समुद्रों में मिलती है लेकिन भूमध्य सागर में इनकी संख्या सर्वाधिक है। पूरे विश्व में डॉल्फिन की 40 प्रजातियां पाई जाती है। मीठे पानी की डॉल्फिन की चार प्रजातियां हैं। भारत की सोंस (*लेटेनिस्टा गेंजेटिका गेंजेटिका*) भी मीठे पानी की प्रसिद्ध डॉल्फिन प्रजाति है जो यहां की नदियों में पाई जाने वाली डॉल्फिन प्रजातियों में प्रमुख है। डॉल्फिन की इस प्रजाति का सोंस नाम इसके द्वारा सांस लेने और छोड़ने के क्रम में निकलने वाली एक विशेष ध्वनि पर रखा गया है। सोंस का प्रथम वैज्ञानिक अध्ययन सन 1879 में जॉन एंडरसन ने किया था। लेकिन सोंस संरक्षण के कार्य में 1972 से तेज़ी आई और तब से इस विलक्षण जलीय जीव को वन्य जीव संरक्षण अधिनियम 1972 द्वारा संरक्षित जीवों की श्रेणी में रखा गया।

सोंस की बनावट समुद्री डॉल्फिन से अलग होती है। भारत में पाई जाने वाली सोंस के दांत छोटे होने के कारण यह अपने भोजन को प्रायः निगलती है। प्रकृति ने इसे विशिष्ट श्रवण शक्ति प्रदान की है। डॉल्फिन की अद्भुत श्रवण शक्ति इसके जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह पानी में 24 किलोमीटर दूर तक की ध्वनियों को सुनने की अद्भुत क्षमता रखती है।

आवाज़ को सुनकर पहचानने का यह विलक्षण गुण डॉल्फिन को भोजन की दिशा की सूचना देता है। सोंस का मुख्य भोजन छोटी मछलियां होती हैं।

भारत में डॉल्फिन का शिकार, दुर्घटना और उसके प्राकृतवास से की जा रही छेड़छाड़ इस जीव के अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह लगाए हुए हैं। डॉल्फिन स्वच्छ व शांत जल क्षेत्र को पसन्द करने वाला प्राणी है। लेकिन मशीनीकृत नावों जैसी मानवीय गतिविधियों से नदी में बढ़ रहा शोर इनके स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल रहा है। डॉल्फिन के आवास क्षेत्रों से की जा रही छेड़छाड़ (जैसे बांधों का निर्माण और मछली पालन) से डॉल्फिन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। बढ़ती सैन्य गतिविधियां, तेल और गैस शोधन कार्य से समुद्र में फैलते ध्वनि प्रदूषण से डॉल्फिन भी अछूती नहीं रही है। जलवायु परिवर्तन से डॉल्फिन की रोग प्रतिरोधक क्षमता में कमी होने से इनकी संख्या लगातार कम होने वाली है। जल में बढ़ता रासायनिक प्रदूषण भी इन पर प्रतिकूल असर डाल रहा है।

भारत में नदियों में बढ़ते प्रदूषण से डॉल्फिनों की संख्या में लगातार कमी आ रही है। जहां दो दशक पूर्व भारत में इनकी संख्या 5000 के आसपास थी वहीं वर्तमान में यह संख्या घटकर करीब डेढ-दो हज़ार रह गई है। ब्रह्मपुत्र नदी में 1993 में प्रति सौ किलोमीटर में औसत45 डॉल्फिन पाई जाती थी। 1997 में यह संख्या घटकर 36 रह जाना इस अनोखे जीव की संख्या में तेज़ी से कमी की सूचना देता है। भारत में नदी की गहराई कम होने और नदी जल में उर्वरकों व रसायनों की अत्यधिक मात्रा मिलने से भी डॉल्फिन के अस्तित्व पर खतरा मंडराने लगा है।

डॉल्फिन का अधिकतर शिकार उसके तेल के लिए किया जाता है। अब वैज्ञानिक

डॉल्फिन के तेल की रासायनिक संरचना जानने का प्रयत्न करने में लगे हैं ताकि वैकल्पिक कृत्रिम तेल के निर्माण से डॉल्फिन का शिकार रुक जाए। भारत में डॉल्फिन के शिकार पर कानूनी रोक है। हमारे देश में इनके संरक्षण के लिए बिहार राज्य में गंगा नदी में विक्रमशिला डॉल्फिन अभयारण्य बनाया गया है। यह अभयारण्य सुल्तानगंज से लेकर कहलगांव तक के 50 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है। वैश्विक स्तर पर भी डॉल्फिन के संरक्षण के प्रयास किए जा रहे हैं। इस जीव के संरक्षण के लिए संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम की सहयोगी संस्था 'व्हेल और डॉल्फिन संरक्षण सभा' ने इस बुद्धिमान जीव के प्रति जागरूकता फैलाने और इसके संरक्षण के उद्देश्य से वर्ष 2007 को डॉल्फिन वर्ष के रूप में मनाया था।

जंगल के बाघ के समान नदी इकोसिस्टम में शीर्ष पर विघमान होने के कारण स्तनधारी जीव सोंस का संरक्षण आवश्यक है। नदी आहार श्रृंखला में सोंस की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यह हानिकारक कीड़े-मकोड़ों के अंडों को भी खाती है। इस प्रकार सोंस पानी को स्वच्छ रख कई जलजनित बीमारियों को फैलने से रोकती है। इस अद्‌भुत जीव की जलीय तंत्र में अहमियत को ध्यान में रखते हुए हमें इसको बचाने के प्रयास में योगदान देना होगा ताकि डॉल्फिन सदियों तक प्रकृति की गोद में खेलती रहे। ***(स्रोत फीचर्स)***